"पंच गौरव" कार्यक्रम

वर्ष – 2025

जिला – अजमेर

प्रकाशन से संबंधित अधिकारी – कर्मचारी

श्री लोक बंधु
जिला कलक्टर, अजमेर

श्री अभिषेक खन्ना
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
जिला परिषद, अजमेर

श्री फूल सिंह
संयुक्त निदेशक
आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अजमेर

श्री भरत कुमार जोशी
सहायक निदेशक
आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अजमेर

श्री यज्ञेश मिश्रा
सहायक सांख्यिकी अधिकारी
आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अजमेर

श्रीमती गुलशन मनवानी
सांख्यिकी निरीक्षक
आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अजमेर

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	1
2	कार्यक्रम के उद्देश्य	2
3	शासकीय संरचना	3
4	कार्यक्रम की प्रभावशीलता और सफलता सुनिश्चित करने के लिए मानदंड	4
5	अनुमत एवं गैर अनुमत कार्य	5–6
6	बजट	7
7	पंच गौरवों से संबंधित विभाग	8
8	उत्पाद – ग्रेनाइट एवं मार्बल के उत्पाद	9
9	उपज – गुलाब	15
10	वनस्पति प्रजाति – नीम	21
11	खेल – कबड्डी	25
12	पर्यटन स्थल – पुष्कर तीर्थ	29

प्रस्तावना

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में **'पंच–गौरव' कार्यक्रम** शुरू किया गया है। कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए ''पंच–गौरव'' के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक उपज, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला–एक खेल एवं एक जिला–एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए है।

कार्यक्रम अंतर्गत अजमेर जिले की विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए अजमेर जिले में उत्पाद में मार्बल एवं ग्रेनाइट के उत्पाद, उपज में गुलाब, वनस्पति प्रजाति में नीम, खेल में कबड्डी एवं पर्यटन स्थल में पुष्कर तीर्थ चयनित किए गए हैं।

अजमेर जिले में जिला स्तर पर चयनित उक्त पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

शासकीय संरचना

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु राज्य स्तर पर नोडल विभाग आयोजना विभाग है। जिले में जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के क्रियान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडो के अनुरूप संचालित हों। अजमेर जिले में कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु श्रीमान जिला कलक्टर महोदय, अजमेर की अध्यक्षता में निम्नानुसार जिला स्तरीय समिति का गठन किया गया है –

क्र.स.	अधिकारी	पद
1	मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद् अजमेर	नोडल अधिकारी
2	सचिव, अजमेर विकास प्राधिकरण	सदस्य
3	उप वन संरक्षक, अजमेर	सदस्य
4	अति. निदेशक, सूचना प्रोद्यौगिकी एवं संचार विभाग, अजमेर	सदस्य
5	उपायुक्त (क्षेत्र–पुष्कर), अजमेर विकास प्राधिकरण	सदस्य
6	संयुक्त निदेशक, कृषि (विस्तार) विभाग, अजमेर	सदस्य
7	संयुक्त निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी, अजमेर	सदस्य
8	संयुक्त निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अजमेर	सदस्य सचिव
9	संयुक्त निदेशक, पर्यटन विभाग, अजमेर	सदस्य
10	महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, अजमेर	सदस्य
11	कोषाधिकारी, अजमेर	सदस्य
12	उप निदेशक, कृषि विपणन बोर्ड (खण्ड–अजमेर), अजमेर	सदस्य
13	उप निदेशक, उद्यान, अजमेर	सदस्य
14	जिला खेल अधिकारी, अजमेर	सदस्य

जिला स्तरीय समिति के कार्यः–

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिलें में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यो पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार–प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव–जिला पुस्तिका तैयार करना।

समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

कार्यक्रम की प्रभावशीलता और सफलता सुनिश्चित करने के लिए मानदंड

क. **स्थानीय विशेषता** – प्रत्येक जिले की संस्कृति और स्थानीय संसाधनों को ध्यान में रखते हुए 'एक विशिष्ट कृषि उपज, वनस्पति प्रजाति, उत्पाद, पर्यटन स्थल और खेल' को चिह्नित किया जाएगा तथा यथा अनुरूप इनके प्रोत्साहन, संरक्षण एवं विकास हेतु गतिविधियां संपादित की जायेगी।

ख. **समुदाय की भागीदारी** – कार्यक्रम के तहत स्थानीय समुदायों को शामिल किया जाएगा ताकि वे अपने जिले की विशेषताओं को पहचान सकें और उन्हें बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

ग. **विकासात्मक दृष्टिकोण** – पंच–गौरव कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संरक्षण है, बल्कि यह आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में भी सहायक होगा।

घ. **प्रशिक्षण और जानकारी** – युवाओं/स्थानीय लोगों को संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान की जाएगी, जिससे वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें।

ड़. **मॉनिटरिंग और मूल्यांकन –**

अ. कार्यक्रम के तहत **विशेषज्ञों की समितियाँ** गठित की जाएंगी, जो उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन करेंगी। ये समितियाँ विभागीय अधिकारियों और उद्योग विशेषज्ञों से मिलकर बनी होंगी, जिससे कार्यक्रम की सफलता के लिए एक समग्र दृष्टिकोण मिलेगा।

ब. **मॉनिटरिंग तंत्र/सेल** स्थापित किया जाएगा, जिसमें सभी संबंधित गतिविधियों की नियमित रिपोर्टिंग और फीडबैक शामिल होगा।

स. स्थानीय समुदायों को भी मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा, ताकि उनकी राय और अनुभवों को ध्यान में रखा जा सके। यह **समुदाय की सक्रिय भागीदारी** को बढ़ावा देगा।

द. कार्यक्रम अन्तर्गत मुख्य रूप से आधारभूत संरचना (Infrastructure) एवं क्षमता संवर्द्धन (Capacity Building) संबंधी अनावर्तक (Non-Recurring) कार्य ही अनुमत होंगे। कार्यक्रम में विशेष आवश्यकता होने पर चयनित गतिविधियों/उत्पादों के विपणन एवं ब्रांडिंग के कार्य भी लिये जा सकेंगे।

अनुमत कार्य (केवल सूचक)

उपज एवं वनस्पति प्रजाति (Produce & Botanical Species) के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	संग्रहण, भंडारण, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, ड्राईंग, प्रसंस्करण सुविधाएं और कोल्ड सप्लाई चेन संरचनाओं का उन्नयन।
2	आबादी को बाजार से जोड़ने के लिए सड़कों, स्ट्रीट बिजली की व्यवस्था, रास्तो पर पेयजल, वॉशरूम, साइनेज, कूड़ेदान, पार्किंग के साथ–साथ मुख्य स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे आदि की व्यवस्था।
3	क्रेता–विक्रेता बैठकों, व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों आदि का आयोजन करके बाजार की उपलब्धता।
4	नई प्रौद्योगिकियों, उन्नत कृषि तकनीकों और नवीनतम Package of Practices के उपयोग से उपज और लाभ बढ़ाने के प्रयास (pilot) के साथ ही प्रशिक्षण देना।
5	उत्पादों के GI-tagging, brand building, product packaging, retail and online advertising के लिए सहायता और IEC, विशेषतः ODOP (One District One Product) कार्यक्रम के तहत चयनित उत्पादों के लिए।
6	स्थानीय किसान बाजारों, मेलों और त्योहारों में स्थानीय उपज की ब्रांडिंग और बिक्री के लिए प्रयास।
7	स्थानीय महिला स्वयं सहायता समूहों (WSHGs) का क्षमतावर्धन।
8	स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर वृक्षारोपण अभियान चलाना।

उत्पाद (Product) के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	बाजार/मंडी में आवश्यक बुनियादी ढांचे, सड़कें, बिजली, जल उपचार, सीवेज उपचार, अपशिष्ट उपचार, पाइप्ड गैस आपूर्ति, गोदाम, लॉजिस्टिक्स, पावर बैक अप, स्ट्रीट लाइटिंग, साइनेज, पार्किंग, सीसीटीवी कैमरे आदि का विकास।
2	प्रदर्शनी–सह–सम्मेलन केंद्रों, निर्यात घरों और निर्यात सुविधा केंद्रों की जानकारी की उपलब्धता और IEC
3	पारंपरिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय शिल्प और हस्तशिल्प क्लस्टर निर्माण।
4	राष्ट्रीय प्लेटफार्मों जैसे ONDC, GeM, इंडिया बिजनेस पोर्टल आदि पर शामिल होने के लिए MSMEs को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना।
5	खरीददार–विक्रेता बैठकों, व्यापार मेलों और राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन।
6	डिजिटल बाजार संबंधों का विकास और डिजिटल मार्केटिंग।

पर्यटन स्थल (Tourist Destination) के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	पर्यटकों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना– प्रमुख पर्यटक स्थलों पर अनिवार्य बुनियादी ढांचे का विकास, सड़क संपर्क में वृद्धि, सूचना केंद्र, पेयजल कियोस्क, शौचालय, प्रकाश व्यवस्था, व्यक्तिगत लॉकर, साइनेज, कूड़ेदान, पार्किंग, सीसीटीवी कैमरे आदि।
2	बस स्टैंड और बाजारों में पर्यटकों के लिए सेवाओं/सुविधाओं का उन्नयन।
3	प्रमुख पर्यटक स्थलों के आसपास थीम–आधारित अनुभवात्मक (स्वयं करने योग्य) गतिविधियों–खानपान, सांस्कृतिक, मनोरंजन आदि का विकास।
4	''एंकर डेस्टिनेशन'' के आसपास वार्षिक कैलेंडरीकृत कार्यक्रमों का आयोजन, जैसे मैराथन, संगीत या फिल्म समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि।
5	एनालॉग/डिजिटल IEC के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक मीडिया में अतुल्य राजस्थान को बढ़ावा देना।
6	जिले के प्रतिष्ठित स्थानों/स्मारक/पैनोरमा पर स्थानीय किंवदंतियों/विरासत पर आधारित एक भव्य ब्रॉडवे शैली सांस्कृतिक शो का आयोजन।

खेल (Games) के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	जिले के स्टेडियम, ट्रेनिंग सेंटर, हॉस्टल आदि का उन्नयन ।
2	खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्कूलों व कॉलेजों में खेलों का महत्व स्थापित करना।
3	जिले के चयनित खेल के अनुसार खिलाड़ियों के उचित प्रशिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करना।
4	आवश्यकतानुसार खिलाडियों को आवास और पोषण संबंधी सहायता के लिए उचित आवासीय सुविधाएं प्रदान करना।
5	खेलों से संबंधित आवश्यक जानकारी (सुविधाओं, आयोजनों, खिलाड़ियों को सहायता आदि) ऑनलाइन और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर उपलब्ध कराना।

6. गैर अनुमत कार्य

- वाहनों एवं कार्यालय के लिए फर्नीचर, उपकरणों आदि की खरीद जैसे व्यय।
- आवर्ती व्यय या भविष्य की देनदारियों को आमंत्रित करने वाले कार्य।
- व्यक्तिगत लाभ के कार्य।
- ऋण चुकाना, बकाया का निपटान, भूमि की खरीदारी, मुआवजे का भुगतान।
- आईटी सिस्टम, पोर्टल के विकास संबंधित कार्य।
- पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाली गतिविधियां।
- विज्ञापन व्यय।

बजट (Resource Envelope)

अ. नोडल विभाग का बजट

राज्य स्तर पर एक जिला एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल विभाग के रूप में कार्य करेंगे। संबंधित नोडल विभाग पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिले के विशेष घटकों के कार्यान्वयन के लिए अपने स्वयं के बजट का उपयोग करेंगे।

ब. अभिसरण (Convergence)

विभागों की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से ही जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम की गतिविधियों का वित्त पोषण प्राथमिकता से किया जायेगा। जिला स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों, योजनाओं और विभागों में उपलब्ध संसाधनों के अभिसरण से कार्य कराये जायेंगे। इसके अतिरिक्त MPLAD, MLALAD, संयुक्त राष्ट्र संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IFIs), गैर सरकारी संगठनों, CSR फाउंडेशन, उद्योग संघों का सहयोग राजस्थान के जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम के कार्यान्वयन को वित्त पोषित करेंगे।

स. वित्त व्यवस्था

पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए प्रत्येक जिले को प्रति वर्ष अधिकतम राशि रूपये 5.00 करोड़ उपलब्ध कराई जाएगी। इस राशि का यथा संभव उपयोग पांचो चिह्नित गौरवों के लिए किये जाने के प्रयास किया जाना अपेक्षित है।

पंच गौरवो से संबंधित विभाग

अजमेर जिले में उत्पाद (मार्बल एवं ग्रेनाइट के उत्पाद) से संबंधित विभाग कार्यालय जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र अजमेर, उपज (गुलाब) से संबंधित विभाग कार्यालय उप निदेशक उद्यान अजमेर, वनस्पति प्रजाति (नीम) से संबंधित विभाग कार्यालय उप वन संरक्षक अजमेर, खेल (कबड्डी) से संबंधित विभाग कार्यालय क्षेत्रीय खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र अजमेर एवं पर्यटन स्थल (पुष्कर तीर्थ) से संबंधित विभाग अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर व नगर परिषद् पुष्कर है।

1. उत्पाद

मार्बल एवं ग्रेनाइट के उत्पाद

परिचय

अजमेर का किशनगढ़ शहर संगमरमर, ग्रेनाइट के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर भारत में संगमरमर का सबसे बड़ा उत्पादक, प्रसंस्करण और वितरण के लिए केंद्रीय बिंदु है। किशनगढ़ अपने उच्च गुणवत्ता वाले संगमरमर के लिए निम्नांकित कारणों से प्रसिद्ध है–

- केकड़ी, सावर, सरवाड, आदि की खदानों से निकटता।
- कुशल श्रमिकों, कारीगरों और शिल्पकारों का लंबा इतिहास जिन्होंने इससे संबंधित कला में निपुणता हासिल की है।
- संगमरमर/ग्रेनाइट की विस्तृत विविधता के साथ वन स्टॉप गंतव्य।
- इस शहर की वैश्विक पहचान।

अजमेर में मार्बल और ग्रेनाइट उत्पाद परिदृश्य

1. किशनगढ़ की स्थिति और बेहतरीन कनेक्टिविटी ने इसे मार्बल और ग्रेनाइट निर्यात के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में उभरने में मदद की है।
2. एनएच 8 राजमार्ग के माध्यम से बाजार तक आसानी से पहुंचा जा सकता है और सड़क, रेल और हवाई मार्ग से इसकी अच्छी कनेक्टिविटी है। क्षेत्रीय संपर्क के लिए किशनगढ़ का अपना छोटा हवाई अड्डा है।
3. अजमेर और इसके आसपास के क्षेत्रों में मार्बल और ग्रेनाइट के विशाल भंडार हैं।
4. इस क्षेत्र में मार्बल और ग्रेनाइट के 10000 से अधिक विक्रेता, आपूर्तिकर्ता, निर्माता और निर्यातक हैं। जिसके कारण प्रतिदिन लगभग ₹ 20 करोड़ का कारोबार होता है।
5. घरेलू निर्यात के साथ–साथ किशनगढ़ से निर्यात किए जाने वाले प्रमुख देश अमेरिका, ब्रिटेन, वियतनाम, भूटान, नेपाल और चीन, आदि हैं।
6. यह चहल–पहल वाला बाजार क्षेत्र किशनगढ़ के औद्योगिक क्षेत्र के आसपास केंद्रित है।

संगमरमर और ग्रेनाइट उत्पाद

किशनगढ़ को अक्सर "भारत का संगमरमर शहर" और "एशिया की संगमरमर मंडी" कहा जाता है, जो विश्व स्तर पर आयामी पत्थरों के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। स्लैब, टाइलें, करेजी, आदि संगमरमर और ग्रेनाइट के विशाल ब्लॉकों से बनाए जाते हैं जिनका

उपयोग फ्लोरिंग, वॉल क्लैडिंग, वैनिटी, टेबल टॉप, काउंटर टॉप, टब डेक, आउटडोर लैंडस्केपिंग में किया जाता है। यहाँ के संगमरमर और ग्रेनाइट उत्पाद किफायती और उच्च गुणवत्ता वाले हैं।

हस्तशिल्प उत्पाद

किशनगढ़ अपने उत्कृष्ट संगमरमर हस्तशिल्प और जड़ाऊ काम के लिए भी जाना जाता है, जिसकी भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की जाती है। राजस्थान की शाही विरासत की भव्यता को दर्शाने वाले इन जटिल हस्तशिल्पों में शानदार संगमरमर की पेंटिंग और देवताओं, जानवरों और कलाकृतियों की खूबसूरती से उकेरी गई आकृतियाँ शामिल हैं।

किशनगढ़ डंपिंग यार्ड

मार्बल एवं ग्रेनाइट, स्लैब, टाइल्स, हस्तशिल्प वस्तुओं, आदि के निर्माण के दौरान उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट के व्यवस्थित निपटान के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार की क्लस्टर योजना के तहत इको–फ्रेंडली डम्पिंग यार्ड विकसित किया गया है। यह किशनगढ़ के टूंकडा रोड पर स्थित है। जिसमें मार्बल एसोसिएशन में पंजीकृत 353 स्लरी टैंकरों द्वारा प्रतिदिन हजारों टैंकर स्लरी डम्पिंग यार्ड में खाली की जाती है। उपरोक्त के अलावा यह डम्पिंग यार्ड वर्तमान में राजस्थान के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है, जहां पर्यटक घूमने के साथ–साथ प्री–वेडिंग फोटोशूट, आदि के लिए आते हैं। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्र में मार्बल उत्पादन से किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं होता है। पूरा क्षेत्र साफ–सुथरा रहता है। इस क्षेत्र का इतना स्वच्छ होना अपने आप में एक मिसाल है, जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

किशनगढ़ मार्बल एसोसिएशन

किशनगढ़ एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों में स्थित मार्बल एवं ग्रेनाइट उद्योगों के बेहतर समन्वय एवं सुचारू संचालन तथा उनकी समस्याओं के प्रभावी प्रतिनिधित्व एवं समाधान के लिए नवंबर 1991 में किशनगढ़ मार्बल एसोसिएशन की स्थापना की गई थी। उद्योग एवं व्यापार के हित में कार्य करने के साथ–साथ एसोसिएशन ने अनेक सामाजिक सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं आधारभूत संरचना विकास के कार्य भी किए हैं, जैसे अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित मार्बल सिटी अस्पताल, भुज भूकंप पीड़ितों एवं कोविड–19 जैसी राष्ट्रीय आपदाओं में योगदान, प्रदूषण नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण एवं डम्पिंग यार्ड का संचालन, आर.के. लिंक रोड का निर्माण, रेलवे ओवर ब्रिज एवं कंटेनर डिपो के निर्माण में सहयोग,

मार्बल उत्पाद प्रदर्शनी स्थल, प्रशिक्षण केंद्र एवं अडिटोरियम के लिए भवन का निर्माण, औद्योगिक क्षेत्र का सौंदर्यीकरण आदि।

अच्छी कनेक्टिविटी और मजबूत बुनियादी ढांचा

किशनगढ़, अजमेर में यातायात एवं परिवहन में आसानी के लिए अपार व्यापारिक संभावनाएं हैं, किशनगढ़ हवाई अड्डा, रेल संपर्क, भीलवाड़ा इनलैंड कंटेनर डिपो (आईसीडी) से निकटता, दिल्ली–मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर मार्ग में निवेश क्षेत्र के रूप में अजमेर–किशनगढ़ का विकास, 05 राष्ट्रीय राजमार्ग चालू हैं एवं भविष्य में यहां बुलेट ट्रेन स्टेशन स्थापित करने का प्रस्ताव है, निकटवर्ती डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) और भारतमाला कॉरिडोर बंदरगाह कनेक्टिविटी और बड़े बाजार तक आसान पहुंच प्रदान करता है, जो जिले में आसानी से व्यापार करने उद्देश्य को साकार कर रहा है और राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के बाजार तक आसान पहुंच प्रदान करता है।

पंच गौरव के तहत अजमेर जिले में ग्रेनाइट एवं मार्बल के उत्पादों से संबंधित कार्य योजना निम्नानुसार है।

क्र.सं.	कार्य योजना
1	जिले के ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादों का डेटाबेस तैयार किया जाना जिसमें उपक्रम का समस्त विवरण, वार्षिक क्षमता, रोजगार, निर्यात का विवरण आदि जानकारी शामिल हो।
2	ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादकों एवं शिल्पियों को प्रतिनिधित्व की दृष्टि से एक एसोसिएशन/संघ/संस्थान का गठन कराते हुये उनके पदाधिकारी से संबंधित सूचना संकलित किया जाना।
3	जिले के ओडीओपी उत्पादों के प्रचार–प्रसार हेतु आवश्यकतानुसार बुकलेट/ब्रोशर, लघु फिल्म, कॉफी टेबल बुक, आदि तैयार करना।
4	राजस्थान सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद को बढावा देने के उदेश्य से ''पंच गौरव'' संवर्धन हेतु निम्न कार्य किया जायेगा – • नवीन सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रूपए एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत या अधिकतम 20 लाख रूपए तक मार्जिन मनी अनुदान सहायता। • सूक्ष्म व लघु उद्यमों को एडवांस्ड टेक्नोलॉजी व सॉफ्टवेयर पर 50 प्रतिशत या 5 लाख रूपए का अनुदान।

	• क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर पर 75 प्रतिशत या 3 लाख रूपए तक पुनर्भरण। • विपणन आयोजनों में भाग लेने के लिए 2 लाख तक सहायता। • ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म फीस पर 75 प्रतिशत या 1 लाख रूपए प्रतिवर्ष का 2 साल तक पुनर्भरण।

2. उपज

गुलाब

परिचय

गुलाब का पुष्प–जगत में एक विशेष महत्व है इसलिये इसे फूलों का राजा कहा जाता हैं। इसे सौन्दर्य का प्रतीक समझा जाता है और आदिकाल से ही विश्वभर के उद्यानों में उगाया जाता रहा हैं। सौन्दर्य के अलावा गुलाब का औद्योगिक महत्व भी है। इससे प्राप्त इत्र, गुलकन्द, गुलाब जल व शरबत का उपयोग व्यापक रूप से किया जाता है। इसके अलावा गुलाब की कलमों, पौधों और कट–प्लावर का उद्योग भी देश–विदेश में अच्छी तरह से स्थापित है।

अजमेर जिले में फूलों का राजा गुलाब जगतपिता ब्रह्मा की नगरी पुष्कर में अपनी कई विशेषताओं के लिए खास पहचान रखता है। पुष्करी गुलाब अपनी विशेषताओं के चलते देश में ही नहीं विदेशों में भी अपनी विशेष पहचान के कारण विख्यात है।

अजमेर जिले के पुष्कर एवं उसके आस पास के क्षेत्रों में लगभग 900 से 1000 हैक्टर क्षेत्र में गुलाब की खेती की जा रही है। पुष्कर में गुलाब की 100 से अधिक छोटी–बड़ी प्रोसेसिंग इकाईयां संचालित हैं, जिसमें गुलाब से विभिन्न उत्पादों गुलकंद, गुलाब जल, इत्र आदि तैयार किए जाते हैं, सूखे लाल व गुलाबी फूलों को देश–विदेश में निर्यात किया जाता है।

उत्पाद

गुलाब से कई महत्वपूर्ण सौन्दर्य प्रसाधन के उत्पाद, गुलकन्द, इत्र, गुलाब जल, शरबत, इत्यादि का उत्पादन व्यावसायिक स्तर पर किया जा रहा है।

क्र.स.	उत्पाद का नाम	विवरण
1	गुलकन्द	गुलकन्द, गुलाब से तैयार होने वाली एक मिठाई की तरह चीज है जिसका उपयोग फ्रूटी, जैम, ठंडाई, शेक, पान मसाला, गुलाब का दूध, गार्निशिंग, गुलाब पाई, आदि बनाने में किया जाता हैं। गुलकन्द का आयुर्वेदिक दवाइयां एवं कई बीमारियों के उपचार में भी प्रयोग किया जाता है।
2	शरबत	यह गुलाब की पंखुडियों, चाशनी एवं दूध से मिलकर तैयार होने वाला एक पेय पदार्थ है।
3	गुलाब जल	गुलाब जल गुलाब की पंखुडियों से बना एक तरल पदार्थ है जिससे सौन्दर्य प्रसाधन एवं औषधीय उत्पाद तैयार किये जाते है।

4	गुलाब तेल	गुलाब का तेल इसकी पंखुडियों से तैयार होने वाला एक खुशबुदार उत्पाद है जिससे इत्र एवं अन्य सौन्दर्य प्रसाधन तैयार किये जाते है।

परियोजना अवधारणा और रणनीति रूपरेखा

अजमेर जिले में गुलाब के विकास एवं संवर्धन हेतु गुलाब की मूल्य श्रृंखला इटंरवेशन योजना को मोटेतौर पर गतिविधियों और हितधारकों के संदर्भ में चार चरणों में विभक्त किया गया हैं – उत्पादन चरण, कटाई के बाद का चरण, प्रसंस्करण चरण और विपणन चरण। गुलाब के उत्पादन में बदलाव के लिए कृषि पद्धतियों के पैकेज ऑफ प्रेक्टीस को अपनाकर, उत्पादकों की क्षमता निर्माण को मजबूत करना आवश्यक है जिससे इस क्षेत्र में शासन संरचनाओं को विकसित किया जा सके।

उत्पादन चरण – इस स्तर पर गुणवत्तापूर्ण कच्चे माल का प्रबन्धन किसानों को उत्पादन क्षेत्र स्तर पर गोदाम निर्माण की प्रक्रिया में सहायता से किया जायेगा। इसके लिए फसल–पूर्व, फसलोत्तर प्रबन्धन की निगरानी उत्पादन क्षेत्र में विषय विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा की जाएगी जो इसके लिए सहायता प्रदान करेगी।

1. इंटरनेट ऑफ थिंग्स – उत्पादन प्रक्रिया में स्थानीय मौसम स्टेशन के साथ उत्पादन क्षेत्र को जोड़ने के लिए फार्म स्तर पर इंटरनेट ऑफ थिंग्स का क्रियान्वयन किया जायेगा।
2. किसानों को गुणवत्तापूर्ण फूलों की खरीद, थोक खरीद के माध्यम से सस्ती दरों पर उर्वरक, कीटनाशक, एवं अन्य आदान उपलब्ध कराने के लिए सामुदायिक सुविधा केन्द्र (सीएफसी) की स्थापना की जाएगी। इस प्रक्रिया को डिजिटल किया जाएगा और अधिकतम, गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सेंसर (पीएच, नमी, पोषक तत्व, आदि) का

उपयोग करके एआई माध्यम से गुलाब की खेती से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाई जाएगी।

3. गुलाब उत्पादक कृषकों की क्षमता वृद्धि हेतु गुलाब उत्पादन की उन्नत तकनीकों की जानकारी हेतु विषय विशेषज्ञ द्वारा प्रशिक्षण मोड्यूल तैयार कर कृषको को प्रशिक्षण एवं अन्य स्थानों/संस्थानों का भ्रमण आयोजित कराया जायेगा।

प्रसंस्करण स्तर – गुलाब के प्रसंस्करण हेतु पुष्कर क्षेत्र में गुलाब उत्पादक कृषकों हेतु एक सामुदायिक सुविधा केन्द्र (सीएफसी) स्थापित कर सामूहिक रूप से क्षेत्र के कृषकों द्वारा उत्पादित गुलाब के फूलों को एकत्रित कर इसकी ग्रेडिंग, सॉर्टिंग एवं प्रोसेंसिग कर गुलाब से विभिन्न उत्पाद यथा शुगर–फ्री गुलकन्द, गुलाब तेल, गुलाब पाउडर, गुलाब एनर्जी ड्रींक, गुलाब की पखुडिंयों का फेस पेक, गुलाब की चोकलेट्स, गुलाब जल, आदि उत्पाद तैयार किये जायेगें। जिसमें उन्नत तकनीकों एवं मशीनरी का उपयोग किया जायेगा।

उत्पादन के बाद प्रबन्धन (विपणन) – किसानों द्वारा तैयार अंतिम उत्पादों को स्थानीय बाजारों, ई–मार्केटिंग प्लेटफार्मों, एफपीओ, बाजार, रिलायंस, डी–मार्ट, अमेजन, आदि राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर के व्यापार मेलों के माध्यम से विपणन किया जाएगा।

सस्टेनेबल प्लान

स्टार्ट–अप अवधारणा आधारित एसपीवी विकसित की जाएगी, जहां विशेषज्ञों की टीम को उत्पादित क्षेत्र में आंतरिक रूप से प्रशिक्षित किया जाएगा और तकनीकी/विशिष्ट संस्थानों के सहयोग से विशेषज्ञों की सहायता प्राप्त की जाएगी। बढ़ते क्षेत्र में सीएफसी, एफपीओ बाजार के साथ तकनीकी सहायता स्तम्भ के रूप में कार्य करेगा। एसपीवी में टीम को उत्पादन क्षेत्र के पेशेवर संचालन के लिए आईआईएम इंदौर, आईआईएम अहमदाबाद, आईआईटी दिल्ली जैसे संस्थानो के साथ प्रशिक्षित किया जाएगा। उत्पादित क्षेत्र के सीईओ को समग्र संचायन के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। इन टीम के सदस्यों को सॉफ्ट इंटरर्वेशन फंड के तहत प्रशिक्षित किया जाएगा। विपणन और संचालन के लिए पेशेवरों को प्रारंभिक अवधि के लिए लगाया जाएगा, बाद में संबंधित क्षेत्र में विशेषज्ञता वाले एसपीवी सदस्य प्रबन्ध को संभालेंगे।

प्रस्तावित कार्यान्वयन ढांचा

गुलाब मूल्य श्रृंखला अन्तर्गत क्षेत्र के गुलाब उत्पादक कृषकों की एक एसपीवी गठित की जायेगी तथा कार्यान्वयन एजेन्सी की पहचान की जायेगी जो मुख्य रूप से कृषि के क्षेत्र में कार्य कर रही हो, जिसको एफपीओ गठन का अनुभव, योजनाओं के अभिसरण/प्रसारण का अनुभव, निर्यात का अनुभव तथा किसानों, हितधारकों, बैंको, थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं गैर सरकारी संगठनों और संभावित खरीददारों के साथ इस प्रकार का कार्य करने का अनुभव हो। जो प्रस्तावित गुलाब प्रसंस्करण और उत्पादन क्षेत्र में मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने के लिए परियोजना में शामिल होने के लिए मौजूद हों।

परियोजना के क्रियान्वयन हेतु एसपीवी के गठन करने हेतु प्रति सदस्य से 5000 रूपये, 50 रूपये प्रति शेयर तथा प्रत्येक किसान को 100 शेयर आवंटित करके अंशदान एकत्र किया जायेगा।

कार्ययोजना की लागत

पंचगौरव के तहत अजमेर जिले में गुलाब के उत्पादन से लेकर उससे बनने वाले उत्पाद, उत्पाद की पैकेजिंग, ब्रांडिंग तथा बाजार में उत्पादों के विक्रय की प्रक्रिया में किये जाने वाले कार्यो की लागत सहित कार्य योजना का विवरण निम्नानुसार हैः–

S.No.	Deliverable	Budget (Lakh Rs.)
1	Women Community Facility Centre 5000 Sq Ft Shed	52
2	Aggregation, Grading, Sorting and Processing	78
3	Product Packaging	10
4	Rose GI Tag	5
5	Brand Building	5
6	SPV Incorporation, NOP, Satvik, HACCP, GST, FSSAI etc	10
7	Capacity Building	10
8	Industry 4.0 Certification and Block Chain Development	5
9	MIS	5
10	Ceo Salary, Accountant, Community Mobilizer & Marketing Staff	20

11	Implementing Agency Facilitation@10% of project cost	20
	Total	220

परियोजना के प्रभाव

परियोजना के सफल क्रियान्वयन से क्षेत्र के गुलाब उत्पादक कृषकों का तकनीकी क्षमतावर्धन किया जाकर इनकी शुद्ध आय में वृद्धि होगी एवं स्थायी आजिविका का साधन तैयार होगा।

3. वनस्पति प्रजाति

नीम

परिचय

नीम का पेड़ भारतीय संस्कृति और परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय ग्रामीण समाज ने शताब्दियों पूर्व नीम को एक विशिष्ट वृक्ष के रूप में पहचाना तथा इससे प्राप्त जड़, तना, छाल, टहनियों, पत्तीयों, पुष्प, फल, बीजरस, तेल, अर्क, आदि का अपने दैनिक जीवन में औषधियों, कीटनाशकों एवं उर्वरकों के रूप में भरपूर उपयोग करता आया है और इसे प्राकृतिक वैद्य की संज्ञा दी है। आधुनिक वैज्ञानिक खोजों ने नीम में पाये जाने वाले विभिन्न अवयवों का विश्लेषण करके इस तथ्य की पुष्टि की है कि यह अनमोल एवं अदभुद गुणों से भरा एक अद्वितीय वृक्ष है।

पर्यावरण विशेषज्ञों, प्रकृतिविदों, चिकित्साविदों, कृषि वैज्ञानिकों एवं वन–विशेषज्ञों आदि द्वारा इसके विभिन्न गुणों जैसे वायरस रोधी, क्षय रोग नाशक, बैक्टीरिया नाशक, फफूंदी नाशक, अमीबा नाशक, फोड़ा/जहरबाद नाशक, खाज/खुजली नाशक, सूजन विरोधी, पाइरिया नाशक, चर्मरोग नाशक, मूत्रवर्धक, ह्रदय संबंधी, कीट नाशक, कीट डिंबनाशक, सूत्र कृमिनाशक, मछिली नाशक और इसके यौगिकों के अन्य जैविक क्रियाओं के कारण उत्पत्ति एवं औषधीय रूप से इसे बहुउपयोगी माना गया है।

उष्णकटिबंधीय जलवायु का पौधा होने के कारण इसे गर्म व ठंडी दोनों जलवायु में लगाया जा सकता है। यह शून्य डिग्री सेंटीग्रेड से 50 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान सहन कर सकता है। परंतु शून्य डिग्री से नीचे तापमान पर यह पौधा जीवित नहीं रहता। अच्छी वृद्धि के लिए 450 से 1200 मिलीमीटर प्रतिवर्ष वर्षा वाले स्थान अति उपयुक्त माने जाते हैं। उचित जल प्रबंधन और जल विकास वाली सभी प्रकार की भूमि जैसे शुष्क पथरीली, रेतीली, उथली, गहरी चिकनी, अम्लीय (5 पी. एच) एवं क्षारीय (10 पी.एच) भूमि में आसानी से इसे उगाया जा सकता है। आरंभिक अवस्था में नीम के पौधे को पाले का खतरा बना रहता है। अतः वृक्षारोपण के बाद एक वर्ष तक पाले से बचाना आवश्यक होता है। तत्पश्चात पाला सहन कर सकने में यह सक्षम हो जाता है। नीम का वृक्ष बहुवर्षीय पौधा है जो कि एक बार लगा देने से 60 से 80 वर्ष तक उपज दे सकता है।

इसे कल्पवृक्ष या देव वृक्ष भी कहा जाता है। नीम को आयुर्वेद में ''सर्व रोग निवारिणी'' कहा गया है जिसका अर्थ है–वह वृक्ष जो सभी रोगों का नाश करता है। इसके पत्ते, छाल, बीज, तेल और फूल औषधीय गुणों से भरपूर होते है। नीम के पेड़ के पत्तियों और बीजों से सैन्दर्य प्रसाधन बनाए जाते है जिससे नीम का आर्थिक महत्व भी है। नीम पर्यावरण संरक्षण में भी मदद करता है।

अजमेर के परिप्रेक्ष्य में नीम

अजमेर की जलवायु और मिट्टी की स्थितियां नीम के लिए उपयुक्त है और यह जिला नीम के बीज, तेल और अन्य उत्पादों के लिए एक महत्वपूर्ण उत्पादक बन सकता है। नीम का वृक्ष अजमेर और राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में पर्यावरणीय संतुलन, कृषि सुधार और औषधीय उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी फेनोलॉजी के अनुरूप रोपण और संरक्षण कार्यक्रम चलाकर वन विभाग पर्यावरण संतुलन और जल संरक्षण में योगदान दे रहा है। नीम का अधिकाधिक रोपण जिले के पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होगा।

अजमेर जिले का गांव पदमपुरा ऐसा गांव है, जहां आबादी से करीब ढाई गुना नीम के पेड़ है। गाँव में बड़ी संख्या में नीम के पेड़ है और कुछ पेड़ों की उम्र 100 साल से भी अधिक है। गाँव में नीम के पेड़ो की रक्षा के लिए सख्त नियम है और यहाँ नीम के पेड़ काटना गौ हत्या के समान माना जाता है। यही वजह है कि भीषण गर्मी में भी गांव का तापमान अन्य के मुकाबले 7 से 8 डिग्री कम है।

अजमेर क्षेत्र में नीम के पौधे का महत्व सिर्फ एक पेड़ से कहीं ज्यादा है। यह ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग है, जो पर्यावरणीय, आर्थिक और सांस्कृतिक लाभ प्रदान करता है। औषधीय उपचार प्रदान करने से लेकर कृषि स्थिरता में योगदान देने तक, नीम का पेड़ अजमेर के लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे यह उनकी विरासत और दैनिक जीवन का एक अमूल्य हिस्सा बन जाता है।

कार्ययोजना

पंच गौरव के तहत अजमेर जिले में नीम से संबंधित कार्य योजना निम्नानुसार हैः–

1. पौधे तैयार करनाः– अजमेर की 12 वन पौधशालाओं में बड़ी संख्या में नीम के पौध तैयार करवाए जा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2024–25 में कुल नवीन पौध तैयारी में से 8 से 10 प्रतिशत नीम के पौधे तैयार किये जा रहे हैं जो आगामी वित्तीय वर्ष के वृक्षारोपण में उपयोग में लिये जायेगें। साथ ही वित्तीय वर्ष 2025–26 में उक्त प्रतिशत को बढ़ाया जायेगा।

2. वृक्षारोपणः–जिले की जलवायु परिस्थितियां नीम के पौधे के लिए अनुकूलित होने के कारण वनभूमि में नीम के पौधे पंच गौरव कार्यक्रम के तहत् सर्वाधिक संख्या में लगाने का लक्ष्य हैं जिससे फॉरेस्ट कवर में भी बढ़ोतरी होगी। कम्यूनिटी व अर्बन फॉरेस्ट्री के तहत् स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर नीम प्रजाति का अधिक से अधिक पौधारोपण कर सघन अभियान चलाए जाएंगें।

3. **जागरूकताः—** नीम प्रजाति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।

4. बॉटेनिकल गार्डन अजमेर में नीम कुंज की स्थापनाः— माननीय मुख्यमंत्री महोदय की बजट घोषणा के क्रम में बॉटेनिकल गार्डन, अजमेर में नीम प्रजाति का रोपण कर पंच गौरव कार्यक्रम के तहत नीम कुंज विकसित किया जायेगा।

5. सड़क किनारे वृक्षारोपणः—अंराई पंचायत में लगभग 50 कि.मी. के रोड़ साईट वृक्षारोपण हेतु नीम के पौधों की निविदा की जाकर उक्त पंचायत में वृक्षारोपण हेतु नीम वितरण किये जायेगें। इस हेतु नीम के पौधों को क्रय करने हेतु 5 से 6 फीट के पौधे की बाजार मूल्य 90 रू. प्रति नीम से लगभग 9.00 लाख रूपये की आवश्यकता रहेगी।

जैविक खेती, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक जीवन और पर्यावरणीय स्थिरता में बढ़ती रूचि को देखते हुए, अजमेर और व्यापक राजस्थान क्षेत्र में नीम का महत्व बढ़ने की संभावना है। औषधीय उपयोग के लिए नीम की क्षमता, जैविक कृषि में इसकी भूमिका और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में इसकी मदद करने की क्षमता नीम को इस क्षेत्र में जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाती रहेगी।

4. खेल

कबड्डी

परिचय

कबड्डी भारत का एक पारम्पिरक खेल है, जिसकी जड़े प्राचीन काल तक फैली हुई है यह ना केवल एक मनोरंजक खेल है बल्कि आत्मरक्षा, सहनशक्ति और टीम वर्क को बढ़ावा देने वाला खेल है माना जाता है। कबड्डी की उत्पत्ति भारत में लगभग 4 हजार वर्ष पूर्व हुई थी। महाभारत में भी कबड्डी खेल का उल्लेख मिलता है, जब अभिमन्यु ने चक्रव्यूह मे प्रवेश किया था।

यह खेल भारत के अलावा लगभग 40 देशों मे खेला जाता है। सन् 1990 में कबड्डी को एशियाई खेलों मे शामिल किया गया था। भारत ने एशियाई खेलों में 8 स्वर्ण पदक व एक रजत पदक प्राप्त किया है।

राजस्थान मे कबड्डी का खेल प्राचीन काल से ही लोकप्रिय रहा है। यह खेल ग्रामीण क्षेत्रों मे पांरपरिक खेल के रूप मे खेला जाता था और इसे शारीरिक शक्ति, चपलता और रणनीति का प्रतीक माना जाता था। राजस्थान के मेलों, त्यौहारों और सामाजिक आयोजनों मे कबड्डी के मुकाबले विशेष आकर्षण का केन्द्र होते हैं।

अजमेर जिले में कबड्डी का इतिहास

अजमेर जिले में कबड्डी खेल काफी प्रचलित व लोकप्रिय खेल है। यहां के लगभग हर मेलों मे कबड्डी खेल का आयोजन होता है, जिसमे अजमेर के साथ पूरे भारत देश के खिलाड़ी प्रतियोगिताओं में खेलते हैं जो कि मेलों में मुख्य आकर्षण का केन्द्र होता है। अजमेर के कई खिलाड़ियों ने राज्य और राष्ट्रीय खेलों में भाग लेकर पदक जीते हैं व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया जिनमें – वाजिद अली खान, डॉ. दिनेश कुमार चौधरी, इरफान खान ने भारतीय टीम में खेलते हुए पदक प्राप्त किये हैं। कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में राजस्थान टीम का प्रतिनिधित्व कर पदक प्राप्त किये हैं जिनमें प्रदीप कुमार भादू, रामकुवार, नरेन्द्र जाट, अजुं चौधरी आदि खिलाड़ी हैं। अजमेर जिले की टीम ने कई बार राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं मे पदक प्राप्त किये हैं।

अजमेर के ग्रामीण अंचल में यह खेल काफी लोकप्रिय है जिनमेः–

1. पंचायत समिति किशनगढ़ –(1)तिलोनिया (2)हरमाड़ा (3) सुरसुरा (4)पिगलोद

2. पंचायत समिति केकड़ी– (1)ग्राम सरसेड़ी (2)सापुणदा (3)दून्धरी

3. पंचायत समिति अजमेर ग्रामीण– (1)रामनेर ढाणी (2)मुहामी (3)कायड़ (4) गगवाना, आदि।

4.पंचायत समिति पीसांगन– (1)मांगलियावास (2)आम्बा (3)भांवता

5. पंचायत समिति अरांई– (1)भामोलाव (2)ढसूक (3)कटसूरा

6.पंचायत समिति श्रीनगर– (1)तीलाना (2)कानपुरा, इत्यादि प्रसिद्ध गांव है जिनमे कबड्डी काफी प्रचलित है तथा इन गांवो से कई खिलाड़ियो ने राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर जिले का नाम रोशन किया है।

कार्ययोजना मय लागत

पंच गौरव के तहत अजमेर जिले में कबड्डी खेल की कार्य योजना मय लागत निम्नानुसार हैः–

क्र.सं.	कार्य योजना	लागत (रूपये)
1	जिले मे कबड्डी खेल को गांव से लेकर शहर तक प्रचलित व विकसित करने हेतु पंचायत समिति, ग्राम स्तर पर सुविधाऐं उपलब्ध करवायी जाने के क्रम में वर्तमान मे कबड्डी खेल जिन पंचायत समितियों व ग्राम पंचायतों मे प्रचलित है वहाँ पर कबड्डी मेट का एक–एक सेट उपलब्ध करवाया जाना है जिसके रख–रखाव की व्यवस्था स्थानीय विधालय में हो जहाँ के शारीरिक शिक्षकों को सुबह–शाम खिलाड़ियों को अभ्यास करवाने हेतु	

	निर्देशित किया जावे। उपरोक्तानुसार वर्तमान मे जिन पंचायत समितियों व ग्राम पंचायतो मे कबड्डी के एक–एक मैट उपलब्ध करवाने की आवश्यकता है वो निम्नानुसार है :–	
	1. पंचायत समिति किशनगढ़ में – 1. ग्राम तिलोनिया 2. सुरसुरा 3. हरमाड़ा (कुल 3 सेट)	15 लाख
	2. पंचायत समिति अजमेर ग्रामीण में – 1. ग्राम रामनेर (रामनेर की ढाणी) 2. ग्राम कायड़ 3. मुहामी	15 लाख
	3. पंचायत समिति केकड़ी में – 1. मुख्यालय पर 2. ग्राम सरसेड़ी	10 लाख
2	अन्तर पंचायत समिति स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन 12 से 16 वर्ष व 16 से 19 आयु वर्ग में करवाया जावे तथा इनमें से प्रतिभावान खिलाड़ियो का चयन कर जिला स्तर पर शारीरिक दक्षता (बेटरी टेस्ट), तकनिकी टेस्ट (SKILL TEST) लिया जाकर 12 से 16 व 16 से 19 आयु वर्ग के 20–20 खिलाड़ियों का चयन कर जिला स्तर पर आवासीय कबड्डी खेल अकादमी खोली जावे जिसमें खिलाड़ियों के लिए योग्य प्रशिक्षकों द्वारा नियमित प्रशिक्षण दिया जावे। साथ ही निःशुल्क आवास, भोजन, शिक्षा, चिकित्सा व खेल उपकरण उपलब्ध कराया जावें।	
3	भोजन व्यवस्था कम से कम 500 रूपये की खुराक प्रतिदिन प्रति खिलाड़ी हो। (500x40x30x10=6000000) (10 महीने का)	60 लाख (10 माह का)
4	खेल पोशाक, 10 हजार रूपये प्रति खिलाड़ी सालाना (10000x40=400000)	4 लाख
5	खेल उपकरण – कबड्डी मेट (2 सेट)	10 लाख
6	फिटनेस (ट्रेनिंग उपकरण)	5 लाख
7	प्रतियोगिताओं के लिए यात्रा–भत्ता	2 लाख
8	विविध व्यय	5 लाख
	कुल	126 लाख

जिन पंचायत समितियों व ग्राम पंचायतो मे कबड्डी मेट उपलब्ध करवाये जायें उन खिलाड़ियों का जिला स्तर पर 15–15 दिन के साल मे 02 आवासीय कैम्प लगवाये जायें।

5. पर्यटन स्थल

पुष्कर तीर्थ

परिचय

पुष्कर अजमेर से 12 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में 510 मीटर (1,670 फीट) की औसत ऊंचाई पर स्थित एक शहर है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, ब्रह्मांड के निर्माता माने जाने वाले भगवान ब्रह्मा ने एक कमल (पुष्प) को जमीन पर गिराया जिससे तुरन्त एक झील बन गई। फिर उन्होंनें उस फूल के नाम पर जगह का नाम रखने का फैसला किया और इस तरह इसका नाम पुष्कर पडा।

समय के साथ, यह एक तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटकों को आकर्षित करता है। अपने प्राचीन मंदिरों, घाटों और पौराणिक इतिहास के कारण पुष्कर ने एक प्रमुख तीर्थ स्थल और सांस्कृतिक स्थल के रूप में अपना स्थान बना लिया है। प्रमुख स्थलों में ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर झील और कई घाट, गुरूद्वारा सिंह सभा, वराह मन्दिर, सावित्री मन्दिर, रंगजी मन्दिर, पाप मोचनी मन्दिर, श्री पंचकुण्ड शिव मन्दिर, अटमटश्वर मन्दिर, आदि प्रमुख हैं जो शहर के आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग हैं।

पुष्कर शहर का नक्शा

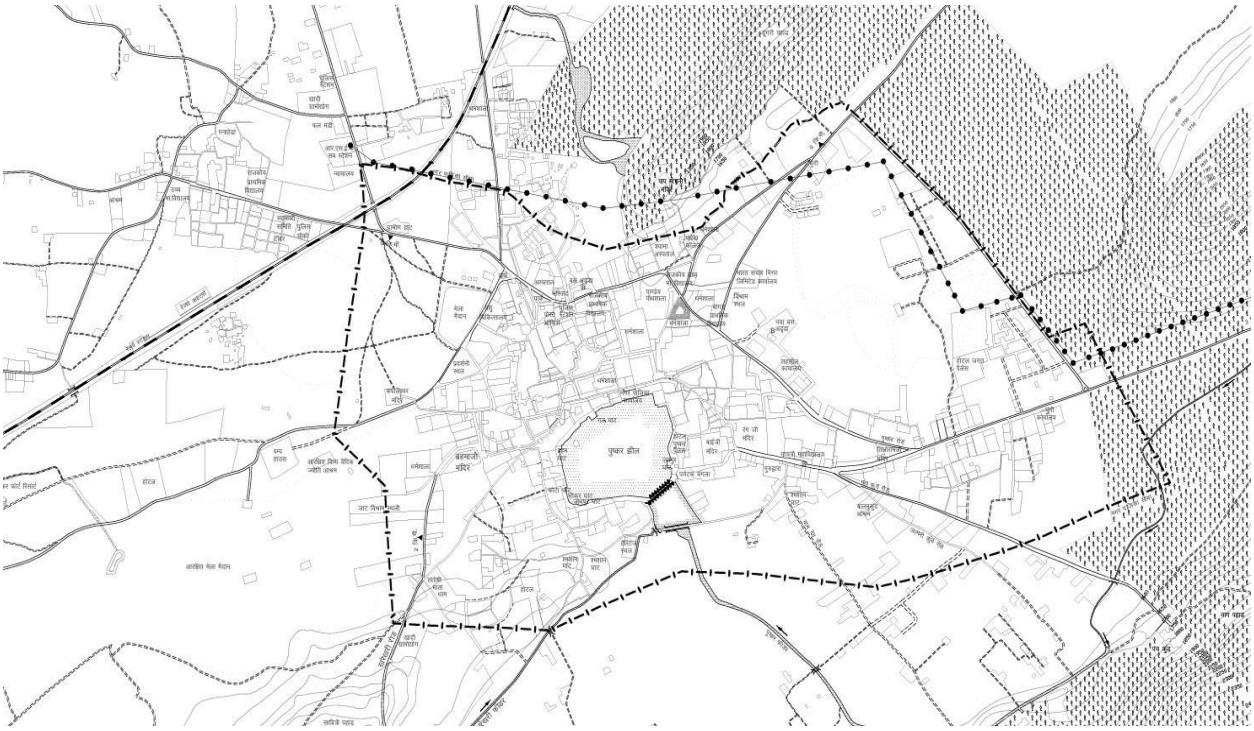

ऐतिहासिक महत्व

पुष्कर इतिहास और आध्यात्मिकता से भरपूर शहर है। इसे तीर्थ स्थलों के राजा के रूप में जाना जाता है, इसका उल्लेख महाभारत सहित प्राचीन ग्रंथों में किया गया है। पुष्कर हिंदू पौराणिक कथाओं और इतिहास में गहराई से निहित है। इसे शास्त्रों में एक पवित्र स्थान के रूप में वर्णित किया गया है। सदियों से, यह धार्मिक गतिविधियों, अनुष्ठानों और तीर्थयात्राओं के केंद्र के रूप में विकसित हुआ है। पुष्कर, हिंदू धर्मशास्त्र में सबसे पवित्र स्थानों में से एक माना जाता है, इसके मूल से जुड़े मिथकों और किंवदंतियों का एक समृद्ध ताना–बाना है।

अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेला

वार्षिक पुष्कर मेला आध्यात्मिक महत्व से भरपूर है, इसकी उत्पत्ति हिंदू धर्मशास्त्र में निहित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, कार्तिक पूर्णिमा (कार्तिक महीने की पूर्णिमा) पर देवता स्वयं पुष्कर झील में इसके जल को पवित्र करने के लिए एकत्र होते हैं। यह दिव्य समागम मेले के महत्व को बढ़ाता है, जो धार्मिक अनुष्ठानों को सांस्कृतिक उत्सवों के साथ जोड़ता है, जो हजारों तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। पुष्कर मेला न केवल एक आध्यात्मिक समागम है, बल्कि राजस्थान की परंपराओं का उत्सव भी है। मेले के दौरान लोक संगीत, नृत्य और कला प्रदर्शन शहर की सांस्कृतिक जीवंतता को प्रदर्शित करते हैं।

सांस्कृतिक विरासत

यह शहर 500 से ज्यादा मंदिरों का घर है, प्रत्येक मंदिर एक अनूठी स्थापत्य शैली और आध्यात्मिक कहानी का प्रतिनिधित्व करता है। ये मंदिर कई तरह के हिंदू देवी–देवताओं को समर्पित हैं, जिनमें ब्रह्मा मंदिर की अति विशेष मान्यता है। जटिल नक्काशी और रूपांकनों से सजी मंदिर की वास्तुकला भारत की प्राचीन शिल्पकला और धार्मिक भक्ति की झलक पेश करती है।

अर्ध गोलाकार आकार और लगभग 8–10 मीटर गहरी पवित्र पुष्कर झील के चारों ओर 52 घाट भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक घाट एक कहानी समेटे हुए है, यहाँ किए जाने वाले अनुष्ठानों से माना जाता है कि वे पापों को धोते हैं और आध्यात्मिक मुक्ति दिलाते हैं। वराह घाट, गौ घाट और ब्रह्मा घाट जैसे घाट विशेष धार्मिक महत्व रखते हैं और साल भर तीर्थयात्रियों का यहाँ आना–जाना लगा रहता है।

पुष्कर के जीवंत त्यौंहार और अनुष्ठान इसकी सांस्कृतिक पहचान को और समृद्ध करते हैं। इसके अतिरिक्त, झील पर आरती और मंदिर समारोह जैसे दैनिक अनुष्ठान शहर को आध्यात्मिकता की आभा से भर देते हैं। यह सांस्कृतिक विरासत पुष्कर को परंपराओं और आध्यात्मिकता का जीवंत संग्रहालय बनाती है, जो भारत की सांस्कृतिक जड़ों से गहरा जुड़ाव चाहने वाले आगंतुकों को आकर्षित करती है। यह इस बात का प्रमाण है कि कैसे धर्म, कला और इतिहास एक साथ मिलकर एक कालातीत सांस्कृतिक विरासत बनाते हैं।

पर्यटको की वर्तमान एवं अनुमानित संख्या

Event/Category	Current Estimates (2024) visitors/day	Projected Estimates (2025-30) visitors/day
Regular Days - Weekdays	15,000–20,000	18,000–25,000
Regular Days - Weekends	25,000–30,000	30,000–40,000
Pushkar Fair - Weekdays	40,000–50,000	50,000–60,000
Pushkar Fair - Weekends	60,000–75,000	75,000–90,000
Pushkar Fair - Peak Days	Over 200,000	Over 250,000
Kartik Snan - Weekdays	250,000–300,000	300,000–350,000
Kartik Snan - Weekends	350,000–400,000	400,000–500,000

पुष्कर शहर की वर्तमान स्थिति

पुष्कर अपनी पवित्र विरासत और आध्यात्मिक महत्व के साथ लंबे समय से दुनिया भर के भक्तों के लिए एक तीर्थ स्थल है। पुष्कर शहर में सृष्टि रचयिता ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है जिस कारण पूरे वर्ष भारतीय सैलानी, श्रद्धालु एवं विदेशी पर्यटक का काफी ज्यादा आवागमन रहता है। शहर में ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर झील, वर्तमान में शहरी दबाव के कारण चुनौतियों से गुजर रहीं है। इसके अतिरिक्त शहर में सुचारू यातायात, चिकित्सा सुविधा, पार्किंग सुविधा, इत्यादि की कमी होने के कारण इसको व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

पुष्कर की सड़कें और बाजार हालांकि निर्मित व समृद्ध हैं, परन्तु भीड़भाड़ और अपर्याप्त संसाधनों के कारण पर्यटकों को आवाजाही में काफी परेशानी होती है। यह परियोजना योजना इन कमियों को व्यापक रूप से दुरूस्त करेगी।

परियोजना अवधारणा

यह कार्ययोजना पुष्कर को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है, साथ ही प्रमुख चुनौतियों का समाधान भी करती है।

प्रमुख मुद्दों में अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, अपर्याप्त पार्किंग, और सार्वजनिक सुविधाएँ शामिल हैं। त्योहारों के दौरान भीड़भाड़ बुनियादी ढाँचे पर और अधिक दबाव डालती है और पर्यटको के सुखद अनुभव को कम करती है।

प्रस्तावित कार्ययोजना का विवरण

"पुष्कर, अजमेर में ब्रह्मा मंदिर कोरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग" का कार्य करवाया जाना है। उक्त कार्य हेतु पर्यटन विभाग, जयपुर को नोडल एजेन्सी एवं अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर को कार्यकारी एजेन्सी बनाया गया है। अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा उक्त कार्य हेतु कन्सलटेन्सी कार्य की ऑनलाईन निविदा जारी कर M/s Ingenious Studio Pvt Ltd, गुरूग्राम (हरियाणा) को दिनांक 13.11.2024 को कार्यादेश दिया गया, जिसके अनुसार कार्य प्रारम्भ तिथि 23.11.2024 है।

"पुष्कर, अजमेर में ब्रह्मा मंदिर कोरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग" के साथ–साथ पुरे पुष्कर शहर के विकास कार्य की Preliminary Project Report तैयार की जाकर पर्यटन विभाग के पत्र दिनांक 25.12.2024 की अनुपालना में पर्यटन मन्त्रालय, भारत सरकार की स्वदेश दर्शन

योजना 2.0 के अन्तर्गत प्राधिकरण द्वारा पर्यटन विभाग, जयपुर को भिजवा दी गई है। पर्यटन मन्त्रालय, भारत सरकार की स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के अन्तर्गत मुख्य बिन्दूः–

1. कल्चर एवं हेरिटेज 2. एडवेन्चर ट्युरिज्म 3. ईको ट्युरिज्म 4. वैलनेस ट्युरिज्म 5. MICE ट्युरिज्म 6. Rural ट्युरिज्म

परियोजना हेतु अनुमानित लागत मय कार्य का विवरण निम्नानुसार हैः–

Sr.No.	Nature of work	Estimated Cost (in Cr.)
1	Ghats development work & Internal and Outer parikrama path	247.50
2	Bramha temple	17.00
3	Lake overflow control	30.00
4	Lake Purification	10.00
5	Sewage line and Pumping Station	50.00
6	Information centre / Welcome plaza at Buda Pushkar Road	2.45
7	Information centre / Welcome plaza at Ajmer Road	2.45
8	Development of existing Mela Ground	20.00
9	New Pashu Mela Ground	100.00
10	Gate at Mazor Entrance Roads	6.00
11	Parking and landscape garden near Savitri Mata Mandir	40.00
12	Wellness centre & Rural Tourism Centre	150.00
13	Convention centre zone	150.00
14	Adventure Sports	50.00
15	Connecting Roads and other arterial roads	288.00
16	Development of 9 km from Nag Pahar to Savitri Mata Mandir Parikrama Path	31.50
17	Development of Bus stand	10.00
18	Development of Railway over Bridge on Ajmer- Bikaner Bypass	90.00
19	Development of Roads circle with landscape and sculpture for beautification	9.00
	Sub-Total (Project Cost)	**1303.90**
a	Funds for Professional, Administrative and Office Expenses by MOT 3% of Project Cost	39.12
b	Funds for Professional, Administrative and Office Expenses by State Level/ Implementing Agency 5% of Project Cost	65.20
c	Supervision cost 10 % of project cost	130.39
d	Escalation cost 5 % of project cost	65.20

e	Physical Contingencies 4.50 % of project cost	58.68
f	Design & PMC fee 1.00 % of project cost	13.04
	Total project cost	**1675.51**

पुष्कर के मुख्य शहरी क्षेत्र को छोड़कर कई जगह भूमि चिन्हित किया जाना प्रस्तावित है जिसमें वैलनेस सेन्टर, कन्वेन्शन सेन्टर, एडवेन्चर स्पोर्ट्स, रूरल ट्युरिज्म, इत्यादि का कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त पुष्कर की मुख्य सड़कों, कनेक्टींग रोड्स, नाग पहाड़ से सावित्री माता मन्दिर परिक्रमा पथ का विकास कार्य, अजमेर–बीकानेर बाईपास पर आर.ओ.बी. का निर्माण, सीवर लाईन व पम्पिंग स्टेशन का विकास कार्य करवाया जाना भी प्रस्तावित है।

स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के बिन्दुओं का पुष्कर के परिदृश्य में विवरण

1.कल्चर एवं हेरिटेज

- घाट विकास कार्य एवं आंतरिक एवं बाह्य परिक्रमा पथ का विकास कार्य
- ब्रह्मा मंदिर का विकास कार्य
- सरोवर ओवरफ्लो नियंत्रण का कार्य
- मौजूदा मेला मैदान का विकास कार्य
- नया पशु मेला ग्राउंड का विकास कार्य

2.एडवेन्चर ट्युरिज्म

- ऊँट और रेगिस्तान सफारी आगंतुकों को ऊँट की पीठ पर या जीप से रेगिस्तान का भ्रमण करने का आनन्द देती है, जो उत्साह और सांस्कृतिक अन्वेषण का एक अनूठा मिश्रण प्रदान करती है।
- हॉट एयर बैलूनिंग से पुष्कर के परिदृश्यों का एक शानदार दृश्य दिखाई देता है, जिसमें शांत पुष्कर झील और अरावली पहाड़ियाँ शामिल हैं, और यह पुष्कर ऊँट मेले के दौरान विशेष रूप से लोकप्रिय है।
- ट्रैकिंग और हाइकिंग के शौकीन लोग सावित्री मंदिर तक की पैदल यात्रा का आनंद ले सकते हैं, जो मनोरम दृश्य और शारीरिक चुनौती प्रदान करता है, जो उन लोगों के लिए आदर्श है जो बाहरी रोमांच पसंद करते हैं।
- रेगिस्तान में तारों के नीचे कैंपिंग करना एक शांतिपूर्ण अनुभव प्रदान करता है, जिसमें पारंपरिक राजस्थानी संगीत और नृत्य माहौल को और भी बेहतर बनाते हैं।

- रेगिस्तान में बाइक चलाना एक रोमांच प्रदान करता है।

3.इको–पर्यटन

- टिकाऊ पर्यटन प्रथाएँ सबसे आगे हैं, जिसमें साइकिल और इलेक्ट्रिक वाहनों जैसे कम प्रभाव वाले यात्रा विकल्पों को बढ़ावा देने वाली पहल शामिल हैं।
- लॉज, मिट्टी के घर और टिकाऊ शिविर स्थलों जैसे पर्यावरण के अनुकूल आवास स्थानीय सामग्रियों का उपयोग करके विकसित किए जाते हैं, जो पर्यटकों के लिए अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हुए पर्यावरण के साथ सामंजस्य सुनिश्चित करते हैं।
- योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसी स्वास्थ्य गतिविधियाँ। पुष्कर का शांत वातावरण, इसकी सांस्कृतिक समृद्धि के साथ मिलकर इसे मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक कायाकल्प चाहने वालों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाता है।

4.वैलनेस ट्युरिज्म

- **योग और ध्यान रिट्रीटः–** व्यक्तिगत योग सत्र, निर्देशित ध्यान और माइंडफुलनेस अभ्यास प्रदान करने वाले रिट्रीट आंतरिक शांति और विश्राम की तलाश करने वाले वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित करेंगे।

- **आयुर्वेद और पारंपरिक उपचारः–** आयुर्वेद, आयुर्वेदिक उपचार और चिकित्सा पर ध्यान केंद्रित करने वाले स्वास्थ्य रिट्रीट प्रदान करता है। इन रिट्रीट में आयुर्वेदिक चिकित्सकों के साथ परामर्श, कायाकल्प मालिश, डिटॉक्स कार्यक्रम और स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए हर्बल उपचार शामिल होंगे।

5.MICE (Meetings, Incentives, Conferences and Exhibitions)

- पुष्कर में सम्मेलन कक्ष और आवास की पेशकश करने वाला MICE टूरिज्म शहर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, आधुनिक सुविधाओं और रणनीतिक स्थान को जोड़ता है, जो इसे कॉर्पोरेट और पेशेवर आयोजनों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाता है।
- स्थान आधुनिक तकनीक, हाई–स्पीड इंटरनेट और पेशेवर सहायता सेवाओं से सुसज्जित हैं, जो कि शहर के सांस्कृतिक आकर्षण को बनाए रखते हैं। ये सुविधाएँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, व्यावसायिक बैठकों और प्रोत्साहन यात्राओं की मेजबानी के लिए उपयुक्त हैं, जो काम और आराम के बीच एक आदर्श संतुलन प्रदान करती हैं।
- पुष्कर, जयपुर के पास एक रणनीतिक स्थान है, जो एक प्रमुख परिवहन केंद्र है, जहां सड़क और हवाई मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

6.Rural Tourism

- **सांस्कृतिक विसर्जनः–** जीवंत उत्सवों में भाग लेना, लोक संगीत प्रदर्शनों में भाग लेना और घूमर जैसी पारंपरिक राजस्थानी लय पर नृत्य करना। शहर के त्यौहार, जैसे तीज और पुष्कर ऊँट मेला, ग्रामीण रीति–रिवाजों और अनुष्ठानों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।
- ग्रामीण आवास में होम स्टे और पर्यावरण के अनुकूल लॉज पारंपरिक राजस्थानी वास्तुकला को दर्शाने के लिए डिजाइन किए गए हैं, जिसमें मिट्टी की दीवारें, छप्पर की छतें और स्थानीय रूप से प्राप्त सजावट जैसे तत्व शामिल हैं।
- **हस्तशिल्प और कारीगरीः–** आगंतुकों को फुलकारी कढ़ाई जैसे कौशल देखने और सीखने का अवसर मिलता है, जिसमें जटिल पुष्प डिजाइन, मिट्टी के बर्तन बनाने की कला जो क्षेत्रीय रूपांकनों को प्रदर्शित करती है, और पारंपरिक राजस्थानी आभूषणों का निर्माण शामिल है।

नगर परिषद्, पुष्कर द्वारा पर्यटन को बढावा दिये जाने हेतु एवं पुष्कर को पंच गौरव के रूप में विकसित किये जाने हेतु निम्नांकित कार्य करवाए जा रहे है

1. परिषद् क्षेत्र में नियमित रूप से दो पारियों में सफाई कार्य करवाया जाता है तथा पर्यटक/वाणिज्यिक स्थलों पर रात्रिकालीन सफाई करवाई जाती है। पुष्कर सरोवर के कुण्डों व सभी घाटों का प्रतिदिन सफाई कार्य करवाया जा रहा हैं, जिस पर अनुमानित लागत राशि 15.00 लाख रूपये प्रति माह है।

2. मुख्यमंत्री शहरी रोजगार गारंटी योजना के तहत परिषद क्षेत्र में राजकीय विभागों, डिवाईडरों पर रंगरोशन व चित्रकारी, आदि कार्य करवाये जा रहे है, जिस पर अनुमानित लागत राशि 5.00 लाख रूपये है।

3. पुष्कर सरोवर के घाटो पर पूर्व में बने चेंजिग रूम खराब हो जाने पर नवीन चेंजिग रूम बनवाये जाने हेतु निविदा कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। शीघ्र ही सरोवर में नवीन चेंजिंग रूम बनाये जाने का कार्य करवाया जाना है, जिस पर अनुमानित लागत राशि 20.00 लाख रूपये है।
4. परिषद द्वारा विभिन्न पर्वो पर लाईटिंग/ डेकोरेशन/ टेन्ट व्यवस्था का कार्य करवाया जाता है, जिस पर अनुमानित लागत राशि 36.00 लाख रूपये है।

5. विभिन्न पर्वो पर परिषद द्वारा सरोवर के किनारों पर दीपदान एवं अन्य सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों का आयोजन करवाया जाता है, जिस पर अनुमानित लागत राशि 20.00 लाख रूपये है।